वैदिक वाङ्मय में 'विष्णु' का स्वरुप

सन्तोष कुमार पाण्डेय*

भारतवर्ष अतिप्राचीन समय से विविध धर्मों तथा धार्मिक सम्प्रदायों का क्रीडास्थल बना हुआ है। भारतीय जनजीवन की आधारशिला को बनाये रखने के लिये वैदिक धर्म दो मुख्य अवान्तर शाखाओं में विभक्त थे–'शैवधर्म' एवं 'वैष्णवधर्म'। इनमें वैष्णव धर्म मनुष्य के भौतिक जीवन की अवहेलना न करके उसके पारमार्थिक जीवन के साथ पूर्ण एकत्व को प्रस्तुत करता है।

वैदिक वाङ्मय के अन्तर्गत सर्वप्रथम 'ऋग्वेद' में वर्णित विष्णु का स्थान द्युस्थानीय अर्थात् आकाश में रहने वाले देवताओं में सर्वश्रेष्ठ है। यास्कानुसार रश्मियों के द्वारा सारे संसार को व्याप्त करने के कारण सूर्य 'विष्णु' के नाम से अभिहित हैं। वैदिक संहिताओं में सबसे महत्त्वपूर्ण घटना, उनका तीन डगों–पाद–विक्षेपों के द्वारा सम्पूर्ण जगत् को माप लेना है।[1] विष्णु के इस माहात्म्य का उद्‌बोधक यह मंत्र नितान्त प्रसिद्ध है जो प्रत्येक संहिता में उपलब्ध होता है–

इदं विष्णुर्विचक्रमे मेधा निदधे पदम्
समूढमस्य पांसुरे।।[2]

ऋग्वेद के 'पुरुषसूक्त' में 'परमपुरुष' को असंख्य सिर, हाथ, आँख, पैरप्रभृति वाला बताकर, ब्रह्माण्ड को व्याप्त करके स्थित होता हुआ वर्णित किया गया है–

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठत् दशाङ्गुलम्।। [3]

''तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीव चक्षुराततम्''[4] में 'विष्णु' परमात्मा के लिये, 'सूरयः' जीवों के लिए और 'दिवीव चक्षुः' प्रकृति रूप सूर्य के लिये प्रयुक्त हुआ है। वैदिक ऋषि भगवान् 'विष्णु' का स्मरण और कीर्तन करने वाले भक्तजनों के प्रति उनकी भक्तवत्सलता को दर्शाते हुये कहता है कि–

***नेट, संस्कृत विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद**

किं चक्रमे पृथिवीमेष एता
श्रेत्राय विष्णुर्मनुषे दशस्यन्।
ध्रुवासो अस्य कीरयो जनासः
उरुक्षितिं सुजनिमा चकार।।[5]

विष्णु का सर्वोच्च पद 'गोलोक' कहलाता है जिसका विशिष्टाद्वैत ग्रन्थों में बड़ा ही साXोपाX निरूपण हुआ है। महाकवि कालिदास ने मेघदूत के विचित्र सौन्दर्य की कल्पना के अवसर पर गोपवेषधारी 'विष्णु' का स्मरण किया है–

रत्नच्छाया–व्यतिकर इव प्रेक्ष्यमेतत् पुरस्ताद्
वाल्मीकाग्रात् प्रभवति धनुः खण्डमाखण्डलस्य।
येन श्यामं वपुरतितरां कान्तिमापत्स्यते ते
बर्हेणेव स्फुरितरूचिना गोप–वेषस्य विष्णोः।। [6]

'ब्राह्मण ग्रन्थों' में याज्ञिक कर्मकाण्ड का विस्तृत विकास सम्पन्न हुआ और साथ ही साथ देवताओं में विष्णु का माहात्म्य भी पूर्वापेक्षया अधिकतर हो गया। 'यज्ञो वै विष्णुः' कहकर विष्णु का यज्ञ के साथ एकत्व स्थापित किया गया। साथ ही साथ इसी यज्ञरूपी विष्णु से जगत् की उत्पत्ति का वर्णन किया गया है। यज्ञात्मक विष्णु के साथ यजमान का ऐक्य–स्थापन ब्राह्मण ग्रन्थ का अभिप्राय प्रतीत होता है। 'तैत्तिरीय संहिता' का कथन है कि विष्णु ने 'वामन' रूप धारण कर तीनों लोकों को जीत लिया।[7] 'शतपथ ब्राह्मण'[8] में भी यही कथा वर्णित है कि असुरों ने देवों को जीतकर लोकों का विभाजन करना शुरु किया। यज्ञरूपी विष्णु के निर्देशन में देवताओं ने उनसे इस विभाजन में अपना भी भाग या हिस्सा माँगा। विष्णु के 'वाराह' रूप धारण करने की कथा का स्रोत 'शतपथ ब्राह्मण'[9] तथा 'तैत्तिरीय संहिता'[10] में प्राप्त होता है। 'मत्स्यावतार' की कथा की सूचना भी 'शतपथ ब्राह्मण'[11] में मिलती है।

तात्त्विक दृष्टि से 'आरण्यकों' में आत्मा, ब्रह्म, जगतादि तत्त्वों का विवेचन किया गया है तथा 'ब्रह्म' को परम सत्, समस्त गुणों से युक्त एवं हेय गुणों से रहित बताया गया है। 'तैत्तिरीय आरण्यक'[12] में कहा गया है कि यही ब्रह्म इस जगत् को धारण किये हुए है और वही सभी प्राणियों के अन्दर प्रविष्ट होकर शासन करता है।

वैदिक वाङ्मय के अन्त में 'उपनिषदों' की गणना होती है। तत्पश्चात् वैदिक वाङ्मय के आधार पर विकास को प्राप्त करने वाले स्मृति, पुराणेतिहासादि का युग प्रारम्भ होता है।

उपनिषदों में आत्मतत्त्व को स्वतःसिद्ध और स्वयंप्रकाश माना गया है। प्रत्येक व्यक्ति को 'अहं जानामि' इस प्रकार अपनी आत्मा का साक्षात् अनुभव होता

है। 'बृहदारण्यकोपनिषद्' में कहा गया है कि 'यह जो कुछ भी है, सब आत्मा है'।[13] यह आत्मा ब्रह्म से अपृथग्सिद्ध है। 'माण्डूक्योपनिषद्' में वर्णित है कि 'यह आत्मा ही ब्रह्म है'।[14] ''यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते....तद्ब्रह्मेति''[15] इस 'तैत्तिरीयोपनिषद्' वाक्य के द्वारा ब्रह्म को जगत् का निमित्तोपादान कारण बताया गया है। ओ३म् का 'उद्गीथ' के रूप में उपासना का विधान 'छान्दोग्योपनिषद्'[16] में वर्णित है।

'वैष्णव' धर्म की प्राचीनतम संज्ञा भागवत धर्म तथा पा×चरात्र मत है। षट् ऐश्वर्य से सम्पन्न होने के कारण विष्णु ही 'भगवत' शब्द से और उनके साधक 'भागवत' शब्द से अभिहित किये जाते हैं।

पाणिनि की 'अष्टाध्यायी' के अनुशीलन से हमें यह भागवत सम्प्रदाय उनसे भी प्राचीनतर दिखाई देता है। पाणिनि ने 'वासुदेवार्जुनाभ्यां वुन्'[17] सूत्र से वासुदेव की भक्ति करने वाले व्यक्ति के अर्थ में 'वुन्' प्रत्यय का विधान हुआ है। वासुदेव की भक्ति करने वाला व्यक्ति 'वासुदेवः भक्तिरस्य' 'वासुदेवक' कहलाता है।

'वैखानस आगम' कृष्ण यजुर्वेद की एक स्वतन्त्र शाखा थी। वैखानस श्रौतसूत्र के भाष्यकार वेंटेश के अनुसार वैखानसों का सम्बन्ध औखेय शाखा के साथ था। इसी कारण अप्पयदीक्षित जैसे मान्य वेदान्ती की दृष्टि में यह आगम विशुद्ध वैदिक एवं इसके सिद्धान्त वेदानुकूल हैं। 'वैखानस गृह्यसूत्र' में विष्णु की अर्चा की स्थापना, प्रतिष्ठा तथा अर्चना का विशिष्ट विधान है।[18] 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में महाकवि कालिदास ने भी वैखानसव्रत का उल्लेख किया है।[19] भगवान् नारायण की उपासना से ही परम पुरुषार्थ की प्राप्ति होती है, यही वैखानस आगम का मूलस्वर है।

वेदों के 'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म' ने पुराणों में सौन्दर्यमूर्ति तथा पतितपावन भगवान् के रूप में अपने को प्रकाशित किया है। वेद की उक्ति है–'एकं सत् प्रेम्णा बहुधा भवति'। अठारह पुराणों में से लगभग आधे पुराणों का सम्बन्ध वैष्णव धर्म से नितान्त स्फुट है। मत्स्य, कूर्म, वाराह तथा वामन–इन चारों पुराणों का नामकरण तथा निर्माण भगवान् विष्णु के चार अवतारों को लक्ष्य कर रखा गया है। भागवत, ब्रह्मवैवर्त, विष्णु, पद्म, नारद–इन पाँच पुराणों में विष्णु के आध्यात्मिक रूप तथा महिमा का व्यापक एवं सर्वांX सुन्दर विवेचन प्रस्तुत किया गया है। वस्तुतः यह सम्पूर्ण जगत् विष्णु में ही ओत–प्रोत है–

तत्र सर्वमिदं प्रोतमोतं चैवाखिलं जगत् ।
ततो जगत् जगत् तस्मिन् स जगच्चाखिलं मुने।। [20]

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ऋग्वेद, 1/154/2
2. ऋग्वेद, 1/22/17
3. ऋग्वेद, 10/90
4. ऋग्वेद, 1/22/20
5. वही, 7/100/4
6. मेघदूतम्, 1/15
7. तैत्तिरीय संहिता, 2/1/3/1
8. शतपथ ब्राह्मण, 1/2/5/1
9. वही, 14/1/2/11
10. तैत्तिरीय संहिता, 7/1/5/1
11. शतपथ ब्राह्मण, 2/8/1/1
12. 'अन्तः प्रविष्टः शास्ता जनानां सर्वात्मा'।–तैत्तिरीय आरण्यक, 11/20
13. बृहदारण्यकोपनिषद्, 4/4/6
14. अयमात्मा ब्रह्म–माण्डूक्योपनिषद्
15. तैत्तिरीयोपनिषद्, 3/1
16. ओमित्येतदक्षमुद्गीथमुपासीत्–छान्दोग्योपनिषद्, 1/1/1
17. अष्टाध्यायी, 4/3/98
18. वैखानस गृह्यसूत्र, द्वितीय पटल।
19. 'वैखानसं किमनया व्रतमाप्रदानाद् व्यापाररोधि मदनस्य निषेवितव्यम्'।–अभिज्ञानशाकुन्तलम्, 1/27
20. नेट, संस्कृत विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद विष्णु पुराण, 1/22/64